वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 14
ISBN 978-93-80353-77-7

बाल विकास

(प्रथम भाग)

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव-2012, पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 61वें त्यागदिवस के अवसर पर घोषित चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष 2012-2013 के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

तेइसवाँ संस्करण	वीर नि. सं. 2539	मूल्य
2200 प्रतियाँ	वैशाख शु. तृतीया, 13 मई 2013	12/-रुपये

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादकः–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

-संस्करण विवरण-
सन् 1974 से 2002 तक 19 संस्करणों में 101,800 पुस्तकें प्रकाशित
बीसवाँ संस्करण-सन् 2008, प्रतियाँ-2200, इक्कीसवाँ संस्करण-सन् 2011, प्रतियाँ-2200
बाईसवाँ संस्करण-सन् 2012, प्रतियाँ-2200

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

जीवन में संस्कारों का बहुत महत्व है। उत्तम देश, उच्च कुल एवं मानव पर्याय प्राप्त होकर भी यदि मानव को सदाचरण रूप अच्छे संस्कार नहीं प्राप्त होते हैं, तो उसका जीवन पशु के समान ही निस्सार हो जाता है। कहा भी है-''ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानः'' अर्थात् ज्ञान से रहित मानव पशु के समान माना जाता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक मानव को सुसंस्कारित होने के लिए तथा जिनागम के रहस्य को समझने के लिए बाल अवस्था से ही धार्मिक-नैतिक ज्ञान का ग्रहण करना बहुत ही आवश्यक है। इसी बात को ध्यान में रखकर बालकों को ज्ञान कराने के लिए 'बाल विकास' नाम से यह पुस्तक चार भागों में प्रकाशित की गई है, जिसका यह द्वितीय भाग है।

ये बाल विकास के चारों भाग विभिन्न परीक्षालयों के पाठ्यक्रम में भी प्रारंभ से ही चलते हैं अतः अन्य स्थानों से भी इनकी परीक्षा देकर विद्यार्थी प्रमाणपत्र प्राप्त करते हैं। अतः बच्चों को परीक्षालयों से परीक्षा फार्म मंगवाकर इनकी विधिवत् परीक्षा दिलवाना चाहिए।

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने जैनधर्म के चारों अनुयोगों पर 250 से भी अधिक पुस्तकों का लेखन, ग्रंथों की हिन्दी व संस्कृत टीकाएँ, इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र आदि काव्यात्मक पूजन विधान ग्रंथ लिखे हैं। उसी श्रृँखला में बालकों को सुबोध शैली में ज्ञान कराने के उद्देश्य से यह बाल विकास पुस्तक सन् 1974 में सचित्र लिखकर प्रदान की है।

दिगम्बर जैन समाज के द्वारा संचालित समस्त शिक्षण संस्थाओं के संचालकों से अनुरोध है कि बाल विकास चारों भाग मंगाकर बालक-बालिकाओं को भगवान महावीर स्वामी की वाणी का रसास्वादन करने की प्रेरणा करें, शिक्षण की व्यवस्था करावें तथा यथासमय उनकी परीक्षाओं की व्यवस्था करके ज्ञानार्जन व ज्ञानदान का महान पुण्यलाभ अर्जित करें।

मंगल स्तुति

रचयित्री– पूज्य आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

जिनने तीन लोक त्रैकालिक, सकल वस्तु को देख लिया।
लोकालोक प्रकाशी ज्ञानी, युगपत् सबको जान लिया।।
रागद्वेष जर मरण भयावह, नहिं जिनका संस्पर्श करें।
अक्षय सुख-पथ के वे नेता, जग में मंगल सदा करें।।1।।

चन्द्र-किरण चन्दन गंगाजल, से भी शीतल जो वाणी।
जन्म-मरण भय रोग निवारण, करने में हैं कुशलानी।।
सप्तभंगयुत स्याद्वादमय, गंगा जगत् पवित्र करें।
सबकी पाप धूलि को धोकर, जग में मंगल नित्य करें।।2।।

विषय वासना रहित निरम्बर, सकल परिग्रह त्याग दिया।
सब जीवों को अभय दान दे, निर्भय पद को प्राप्त किया।।
भव समुद्र में पतित जनों को, सच्चे अवलम्बन दाता।
वे गुरूवर मम हृदय विराजो, सब जन को मंगल दाता।।3।।

अनन्त भव के अगणित दुःख से, जो जन का उद्धार करे।
इन्द्रिय सुख देकर शिव-सुख में, ले जाकर जो शीघ्र धरे।।
धर्म वही है तीन रत्नमय, त्रिभुवन की सम्पति देवे।
उसके आश्रय से सब जन को, भव-भव में मंगल होवे।।4।।

श्री गुरू का उपदेश ग्रहण कर, नित्य हृदय में धारें हम।
क्रोध मान मायादिक तजकर, विद्या का फल पावें हम।।
सबसे मैत्री दया क्षमा हो, सबसे वत्सल भाव रहे।
'सम्यग्ज्ञानमती' प्रगटित हो, सकल अमंगल दूर रहे।।5।।

पाठ–1 णमोकार मंत्र

णमो अरिहंताणं अर्हंतों को नमस्कार हो।

णमो सिद्धाणं सिद्धों को नमस्कार हो।

णमो आइरियाणं आचार्यों को नमस्कार हो।

णमो उवज्झायाणं उपाध्यायों को नमस्कार हो।

णमो लोए सव्वसाहूणं लोक में सर्व साधुओं को नमस्कार हो।

इस मन्त्र में अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु इन पाँच परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है।

प्रश्नावली–परमेष्ठी कितने होते हैं?

–इस मन्त्र में कितने अक्षर हैं?

पाठ–2 णमोकार मंत्र का माहात्म्य

जीवंधर कुमार ने मरते हुए कुत्ते को णमोकार मंत्र सुनाया जिसके प्रभाव से वह मरकर देवगति में सुदर्शन यक्षेन्द्र हो गया। उसने वहाँ से आकर जीवंधर कुमार को नमस्कार किया और स्तुति की।

एसो पंचणमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

अर्थ–यह पंच नमस्कार मंत्र सब पापों का नाश करने वाला है और सब मंगलों में पहला मंगल है।

शिष्य–गुरूजी! क्या हम लोग पांचों परमेष्ठी में से किसी का पद प्राप्त कर सकते हैं?

अध्यापक–हाँ! आप लोग मनुष्य पर्याय से पाँचों परमेष्ठी के पद प्राप्त कर सकते हैं। देखो! दिगम्बर मुनियों के संघ में आचार्य, उपाध्याय और साधु ये तीनों परमेष्ठी रहते हैं। ये ही मुनि आगे अर्हंत, सिद्ध भी बन सकते हैं।

प्रश्नावली–इस चित्र में विमान में कौन है?

–जीवंधर कुमार ने क्या किया?

–उसका फल क्या मिला?

पाठ–3 णमोकार मंत्र के अपमान का कुफल

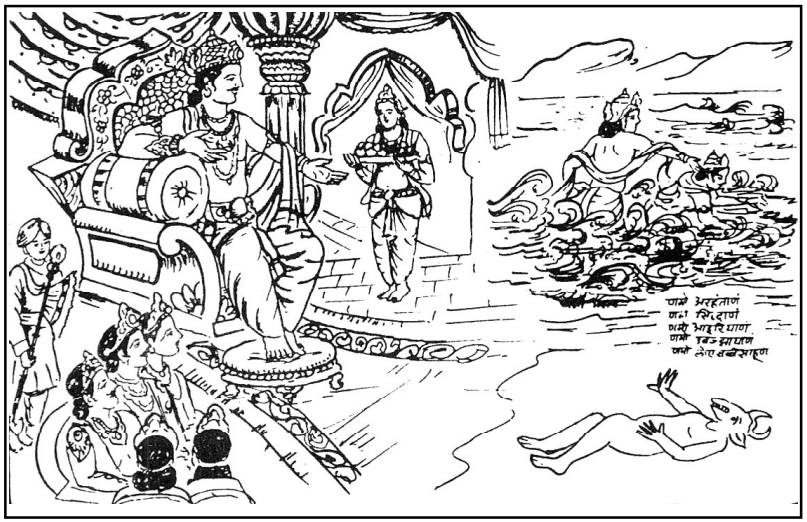

शिष्य–गुरूजी! यह राजा णमोकार मंत्र पर पैर क्यों रख रहा है?

अध्यापक–यह राजा सुभौम चक्रवर्ती छह खण्डों का स्वामी है। एक ज्योतिष्क देव ने शत्रुता से राजा को मारना चाहा परन्तु राजा के णमोकार मंत्र जपने से वह मार नहीं सका। तब उसने छल से कहा कि राजन्! तुम इस मंत्र को लिखकर उस पर पैर रख दो, तब मैं तुम्हें छोड़ दूँगा। राजा ने वैसा ही किया। मंत्र के अपमान से देव ने राजा को समुद्र में डुबो दिया। इस प्रकार वह राजा मरकर सातवें नरक में चला गया।

प्रश्नावली–णमोकार मंत्र के अपमान से राजा कहाँ गया?

–चित्र में बताओ, देव कौन है?

पाठ–4 चौबीस तीर्थंकर

तीर्थंकर चौबीस होते हैं। उनके ऋषभनाथ से लेकर श्री महावीर पर्यंत नाम हैं। उनकी पहचान के लिये प्रत्येक के अलग-अलग ये चिन्ह बताये गये हैं।

1 ऋषभनाथ	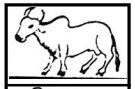	बैल	13 विमलनाथ	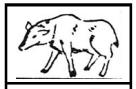	शूकर
2 अजितनाथ	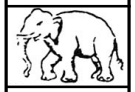	हाथी	14 अनन्तनाथ		सेही
3 संभवनाथ		घोड़ा	15 धर्मनाथ		वज्रदंड
4 अभिनंदननाथ		बन्दर	16 शांतिनाथ	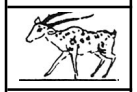	हिरण
5 सुमतिनाथ		चकवा	17 कुन्थुनाथ	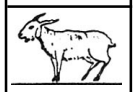	बकरा
6 पद्मप्रभ	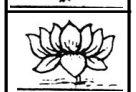	कमल	18 अरनाथ		मछली
7 सुपार्श्वनाथ	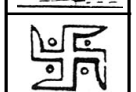	साथिया	19 मल्लिनाथ		कलश
8 चन्द्रप्रभ		चन्द्रमा	20 मुनिसुव्रतनाथ	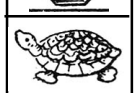	कछुवा
9 पुष्पदंतनाथ		मगर	21 नमिनाथ		नीलकमल
10 शीतलनाथ		कल्पवृक्ष	22 नेमिनाथ		शंख
11 श्रेयांसनाथ		गेंडा	23 पार्श्वनाथ		सर्प
12 वासुपूज्य	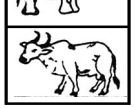	भैंसा	24 महावीर	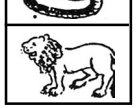	सिंह

पाठ–5 जीव-अजीव

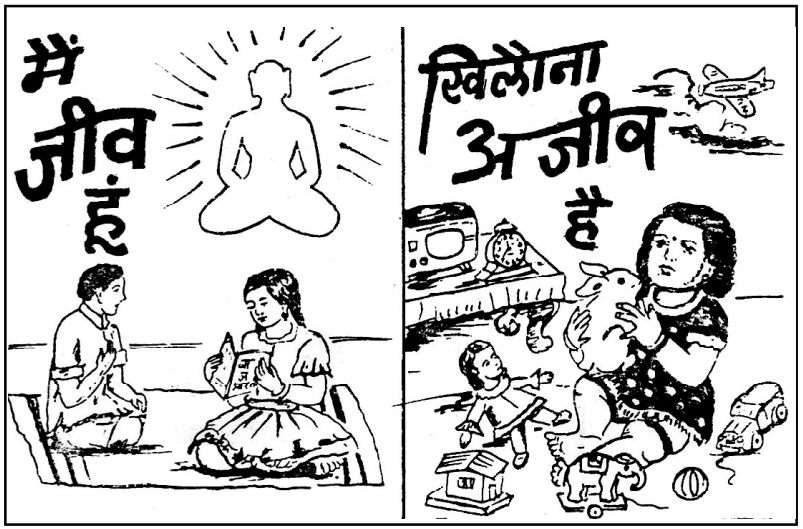

मैं जीव हूँ। मुझमें जानने (ज्ञान) और देखने (दर्शन) की शक्ति है तथा मैं जीता था, जीता हूँ और जीऊँगा इसलिये जीव हूँ। मनुष्य, तिर्यंच, पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े, वृक्ष आदि सभी जीव हैं।

यह खिलौना अजीव है। इसमें जानने और देखने की शक्ति नहीं है। यह सुख और दुःख का अनुभव नहीं कर सकता, इसलिये अजीव है। घड़ी, मोटर, टेलीविजन, मकान आदि अजीव हैं।

प्रश्नावली (पाठ 4)–तीर्थंकरों की प्रतिमाओं में चिन्ह क्यों होते हैं?
–कमल और कलश ये किनके चिन्ह हैं?
–संभवनाथ और पार्श्वनाथ का चिन्ह क्या है?

प्रश्नावली (पाठ 5)–पेड़-पौधे जीव हैं या अजीव?
–हवाई जहाज जीव है या अजीव?
–तुम जब सोते हो तब जीव हो या अजीव?

पाठ–6 जीव के भेद

जीव के दो भेद हैं– संसारी और मुक्त।

मैं संसारी जीव हूँ। अनादि काल से संसार में ही घूमकर जन्म-मरण के दुःख उठा रहा हूँ। मेरे साथ आठों कर्म लगे हुए हैं, इसलिये मैं संसारी हूँ। मनुष्य, देव, नारकी और तिर्यंच ये सब संसारी जीव हैं।

जिन्होंने आठों कर्मों का नाश कर दिया है, जो संसार के दुःखों से, जन्म-मरण के चक्कर से छूट गये हैं, जो लौटकर संसार में कभी नहीं आवेंगे, वे मुक्त जीव या सिद्ध परमात्मा कहलाते हैं।

शिष्य–क्या हम भी सिद्ध बन सकते हैं?

अध्यापक–हाँ! अवश्य बन सकते हैं। सिद्ध बनने का उपाय समझने के लिये ही तो हम और आप जैन धर्म पढ़ते हैं।

प्रश्नावली–अर्हंत परमेष्ठी संसारी हैं या मुक्त?
–तुम मनुष्य हो या देव?
–मुक्त जीव के कुछ कर्म बाकी हैं या नहीं?

पाठ–7 इन्द्रिय का लक्षण

संसारी जीव की पहचान के चिन्ह को इन्द्रिय कहते हैं।

इन्द्रिय के पाँच भेद हैं– स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण।

जिससे छू जाने पर हल्का, भारी, ठंडा आदि का ज्ञान होता है, उसे स्पर्शन इन्द्रिय कहते हैं।

जिससे खट्टा, मीठा, कडुआ, चटपटा व कषायला रस जाना जाता है, उसे रसना इन्द्रिय कहते हैं।

जिससे सुगन्ध और दुर्गन्ध का ज्ञान होता है, उसे घ्राण इन्द्रिय कहते हैं।

जिससे काला, पीला, नीला, लाल, सफेद रंग जाना जाता है, उसे चक्षु इन्द्रिय कहते हैं।

जिससे मनुष्य, पशु, पक्षी, बादल, बाजे आदि की आवाज जानी जाती है, उसे कर्ण इन्द्रिय कहते हैं।

शिष्य–हमारे कितनी इन्द्रियाँ हैं?

गुरूजी–हमारे और आपके पाँचों इन्द्रियाँ हैं क्योंकि हम लोग छूकर वस्तुओं को जानते हैं, चखकर रसों का, सूँघकर फलों का, देखकर चित्रों का और सुनकर शब्दों का ज्ञान कर लेते हैं।

प्रश्नावली–इन्द्रियाँ कितनी हैं?

–तीन इन्द्रिय जीव के कर्ण हैं या नहीं?

–अन्तिम चित्र से तुम क्या समझते हो?

पाठ–8 सच्चे देव, शास्त्र और गुरु

जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी हैं तथा अर्हंत, तीर्थंकर, जिनेन्द्र आदि नामों से जाने जाते हैं, वे सच्चे देव कहलाते हैं।

जो सर्वज्ञ देव का कहा हुआ है और उन्हीं के वचनों के आधार पर आचार्यों द्वारा कहा गया है, वही सच्चा शास्त्र है, उसे जिनवाणी भी कहते हैं।

जो विषयों की आशा से रहित हैं, सम्पूर्ण आरम्भ और परिग्रह से रहित हैं, नग्न दिगम्बर मुनि हैं, वे सच्चे गुरू हैं, उन्हें ही साधु, आचार्य, सद्गुरू और तपस्वी कहते हैं।

मैं प्रतिदिन जिनमन्दिर में जाकर जिनेन्द्रदेव की प्रतिमा का दर्शन करता हूँ एवं मुनियों को नमोस्तु भी करता हूँ, अब सच्चे शास्त्रों का स्वाध्याय भी करूँगा।

प्रश्नावली–देव, शास्त्र, गुरू इन तीनों में से आज कौन-कौन हैं?

–इनके दर्शन से क्या फल मिलता है?

–नमस्कार कैसे करना चाहिये?

पाठ–9 देव भक्ति का सुफल

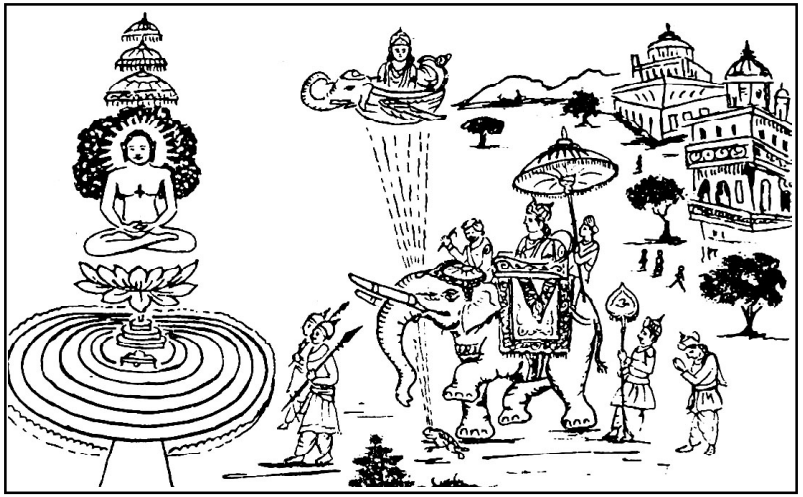

एक मेंढक भगवान की भक्ति में गद्‌गद होकर कमल पंखुड़ी को मुख में दबाकर दर्शन के लिये चल पड़ा। मार्ग में राजा श्रेणिक के हाथी के पैर के नीचे दब गया और शुभ भावों से मरकर स्वर्ग में देव हो गया। वहाँ से तत्क्षण ही भगवान के समवसरण में दर्शन करने आ गया। राजा श्रेणिक ने उस देव के मुकुट में मेंढक का चिन्ह देखकर श्री गौतम स्वामी से उसका परिचय पूछा। वहाँ सभी लोग देव-दर्शन की भावना के फल को सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुए।

देखो बालकों! भगवान के दर्शन की भावना से भी कितना पुण्य बन्ध होता है। कभी भी खाली हाथ से भगवान और गुरू का दर्शन नहीं करना चाहिए। चावल, लौंग, सुपारी, फल आदि चढ़ाकर ही दर्शन करना चाहिये।

प्रश्नावली–मेंढक कैसे मरा और कहाँ गया?

–दर्शन करते समय क्या चढ़ाना चाहिये?

–चित्र में देव कहाँ है और मेंढक कहाँ है?

पाठ–10 देव प्रतिमा के अपमान का कुफल

रानी कनकोदरी ने पट्टरानी पद के अभिमान से अपनी सौत के ऊपर क्रोध करके उसके चैत्यालय से जिन प्रतिमा को मँगाकर बाहर डलवा दिया, पुनः संयमश्री आर्यिका के समझाने से वापस प्रतिमा को चैत्यालय में विराजमान करके बहुत प्रकार से पूजा की और प्रायश्चित किया।

वही रानी अगले भव में अंजना हो गई। वहाँ उस पाप का उदय आ जाने से बाईस वर्ष तक उसे (अंजना को) पति के वियोग का दुःख सहना पड़ा।

प्रिय बालक-बालिकाओं! तुम्हें जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा का मन-वचन-काय से कभी अपमान नहीं करना चाहिये।

प्रश्नावली–कनकोदरी ने जिन प्रतिमा का अपमान क्यों किया?

–इसका उसे क्या फल मिला?

–चित्र में नीचे स्त्रियाँ कौन हैं और क्या कर रही हैं?

पाठ–11 गुरु भक्ति का सुफल

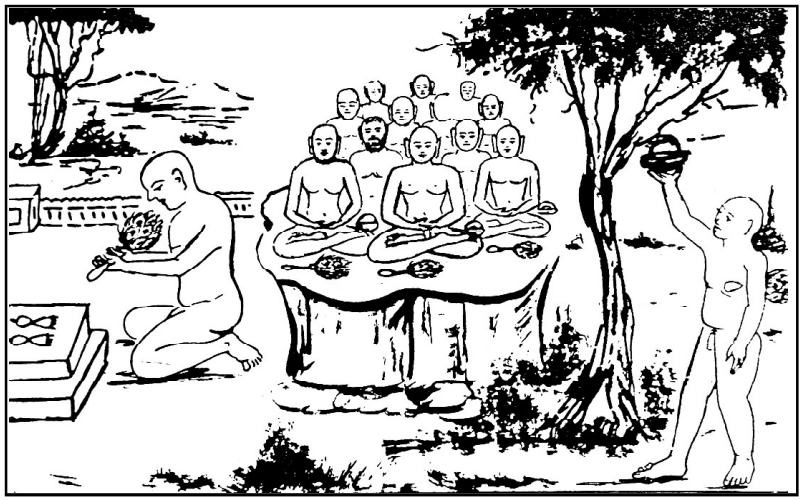

मौर्य सम्राट 'चन्द्रगुप्त मुनिराज' श्रुतकेवली श्री भद्रबाहु की समाधि के पश्चात् स्थापित गुरूचरण की भक्ति करते हुए बारह वर्षों तक वन में रहे, जिसके प्रभाव से देवों ने वन में ही नगर बसाकर उनको आहार दान दिया। जब संघ वापस आया तब उनमें से एक मुनि आहार के बाद कमंडलु भूल आये, सो मध्यान्ह में लेने गये, तब वहाँ वन में कमंडलु पेड़ पर लटकता हुआ देखा।

इस घटना से यह मालूम हुआ कि चन्द्रगुप्त मुनिराज की गुरू-भक्ति से प्रसन्न होकर देवों ने आहार कराया था। उस समय चन्द्रगुप्त ने प्रायश्चित किया क्योंकि जैन मुनि देवों के हाथ से आहार नहीं लेते हैं।

प्रिय बालकों! जब गुरू-भक्ति से मुक्ति तक मिल सकती है तब देवता भक्ति करने लगें, यह कोई बड़ी बात नहीं है।

प्रश्नावली—चन्द्रगुप्त कौन थे?

—उनको गुरू-भक्ति से क्या फल मिला है?

पाठ–12 गुरु–निन्दा का कुफल

एक बार चतुर्विध संघ (मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका) सम्मेद शिखर जाते हुए 'अंतिक' नामक ग्राम से निकला। उस समय नग्न मुनियों को देखकर सब लोग हँसने लगे और निन्दा करने लगे। एक कुम्भकार ने सबको हँसी करने से मना किया और संघ की स्तुति की। कदाचित् गाँव में आग लगकर साठ हजार लोग सब एक साथ मरकर मुनियों की हँसी करने के फलस्वरूप कौड़ी पर्याय (दो इन्द्रिय) में उत्पन्न हो गये पुनः मरकर गिजाई हो गये। बहुत भवों तक एक साथ दुःख भोगते-भोगते कदाचित् सगर चक्रवर्ती के साठ हजार पुत्र हो गये।

देखो बालकों! किसी की भी हँसी और निन्दा करना पाप है फिर मुनियों की निन्दा करना तो महापाप है।

प्रश्नावली—चतुर्विध संघ किसे कहते हैं?

—मुनियों को देखकर हँसने से क्या फल मिला?

—चित्र में कौड़ी और गिजाई कहाँ हैं?

पाठ–13 तीन लोक

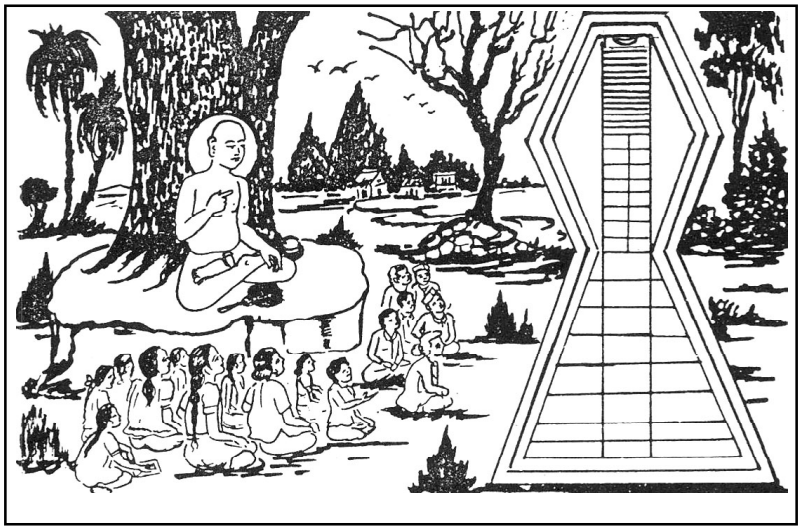

लोक के तीन भेद हैं–ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक और अधोलोक।

अधोलोक में सात नरक हैं।

मध्यलोक में असंख्यातों द्वीप समुद्र हैं। इन सबके बीच में पहला जम्बूद्वीप है।

ऊर्ध्वलोक में सोलह स्वर्ग, नव ग्रैवेयक, नव अनुदिश और पाँच अनुत्तर हैं। उनके ऊपर सिद्ध शिला है।

सिद्ध शिला से ऊपर लोक के अग्रभाग में सिद्धभगवान विराजमान हैं।

प्रश्न–इस पुरुषाकार लोकाकाश में मध्यलोक कहाँ है?

उत्तर–इसमें कटि के समान मध्य का मध्यलोक है।

प्रश्न–इसमें त्रसजीव कहाँ रहते हैं?

उत्तर–नीचे से लेकर ऊर्ध्वलोक तक लगभग 13 राजु लम्बी, एक राजु चौड़ी और एक राजु मोटी त्रसनाली है। इसी में त्रसजीव रहते हैं।

प्रश्न–तीनों लोकों में हम कहाँ हैं?

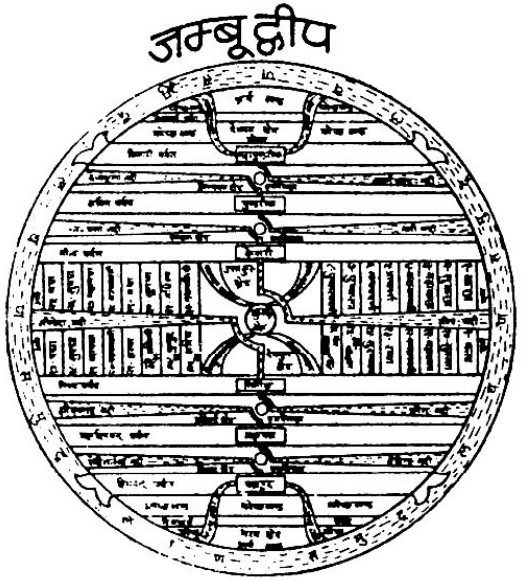

उत्तर–मध्यलोक में बीचों-बीच के जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र है। उसके आर्यखण्ड में हम और आप सभी लोग रहते हैं। सारी दुनिया इसी में है।

प्रश्नावली–लोक कितने हैं?

–ऊर्ध्वलोक में क्या-क्या है?

–चित्र में ऊर्ध्वलोक और सिद्ध-शिला को बताइये?

–जम्बूद्वीप के चित्र में आर्यखण्ड कहाँ है?

–त्रसनाली की लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई से तुम क्या समझते हो?

पाठ–14 देवदर्शन विधि

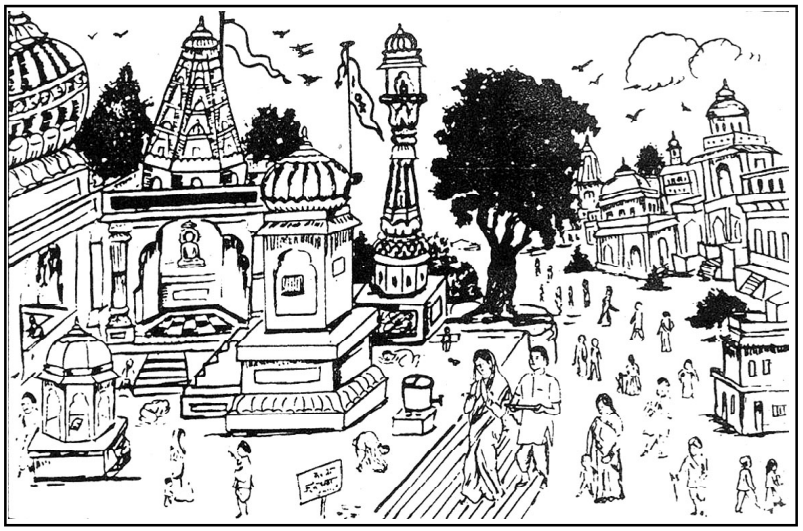

मंदिर के दरवाजे में प्रवेश करते ही बोलें–**ॐ जय जय जय, निःसही निःसही निःसही। नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु।**

भगवान के सामने खड़े होकर दोनों हाथ जोड़कर बोलें–

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

भगवान की तीन प्रदक्षिणा देवें। बँधी मुट्ठी से अँगूठा भीतर करके चावल के पुँज चढ़ावें।

भगवान के सामने **अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु** ऐसे पाँचों पद बोलते हुए क्रम से बीच में, ऊपर, दाहिनी तरफ, नीचे और बाईं तरफ ऐसे पाँच पुँज चढ़ावें।

*
* * *
*

सरस्वती के सामने **प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः** ऐसे बोलकर क्रम से चार पुँज लाइन से चढ़ावें। ❋ ❋ ❋ ❋

गुरू के सामने **सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र** ऐसे बोलकर क्रम से तीन पुँज लाइन से चढ़ावें। ✦ ✦ ✦

पुनः हाथ जोड़कर निम्न स्तोत्र बोलें–

हे भगवन्! नेत्रद्वय मेरे, सफल हुये हैं आज अहो।
तव चरणांबुज का दर्शन कर, जन्म सफल है आज अहो।।
हे त्रिभुवन के नाथ! आपके, दर्शन से मालूम होता।
यह संसार जलधि चुल्लू जल, सम हो गया अहो ऐसा।।1।।
अर्हंतसिद्धाचार्य औ, पाठक साधु महान्।
पंच परम गुरू को नमूँ, भवभव में सुखदान।।2।।

पुनः विधिवत् पृथ्वी तल पर मस्तक टेककर नमस्कार करें।

अर्थ–हे भगवन्! आपके चरण कमलों का दर्शन करके आज मेरे दोनों नेत्र सफल हो गये हैं और मेरा जन्म भी सफल हो गया है। हे तीन लोक के नाथ! आपके दर्शन करने से ऐसा मालूम होता है कि जो मेरा संसारसमुद्र अपार था सो आज चुल्लू भर पानी के समान थोड़ा रह गया है।

अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु ये पंच परम गुरू भव-भव में सुख देने वाले हैं। मैं इनको नमस्कार करता हूँ।

गंधोदक लेने का मंत्र–

निर्मल से निर्मल अति, अघ नाशक सुखसीर।
वंदूं जिन अभिषेक कृत, यह गंधोदक नीर।।

प्रश्नावली–देवदर्शन कैसे करना चाहिये?
–भगवान के सामने कितने पुँज चढ़ाने चाहिये?
–हे त्रिभुवन के नाथ! आपके...., इस श्लोक का अर्थ बताओ

✣ ✣ ✣ ✣ ✣